16 दिवसीय महिला हिंसा विरोधी अभियान –
नवम्बर 25 से 10 दिसम्बर 2007

विश्व भर में, सोलह दिवसीय अभियान का अपना एक ऐतिहासिक महत्व है। इन दिनों विश्व भर में अधिक्तर लोग व समूह, महिलाओं के खिलाफ़ जेंडर आधारित हर तरह की हिंसा उन्मूलन के लिए हर दिन कोई ना कोई गतिविधियों में सक्रिय रूप से शामिल होते हैं। 16 दिन के अभियान की कड़ी में जागोरी ने भी हर साल की तरह इस साल भी इस अभियान को चलाया। इस बार इस 16 दिवसीय अभियान में घरेलु हिंसा को मुख्य बिन्दु बनाया। इस 16 दिवसीय अभियान में हमने 7 कार्यक्रम किये।

23–11–07 को आई.आई.टी.एफ प्रगति मैदान में अलग अलग गेट पर खडे होकर हेल्प लाईन बुक्लेट व पर्ची बाँटी व लोगों से बात की, कि महिला हिंसा क्या है व इसे रोकने में सब का सहयोग क्यों जरुरी है।

27–11–07 को टेम्पो रैली का आयोजन किया। इस रैली में हमने सफदरजंग ट्रर्मिनल व केन्द्रिय सचिवालय के सभी मैट्रो द्वारों पर हेल्प लाईन बुकलेट व पर्ची बाँटी। इसके बाद करोल बाग कि मार्किट में जाकर हेल्प लाईन बुकलेट व पर्ची व लोगों से बात की। इस दिन के अभियान में बवाना, खादर की किशोरियां व महिलाएं भी शामिल हुई। एक्शन इंडिया के चार कार्यकर्ता भी शामिल हुए व जागोरी कि पूरी टीम इसमें शामिल थी। इसके साथ–साथ प्रगतिशील गाने, और जागोरी द्वारा अनेक प्रकार के नारे जो कि घरेलु हिंसा पर आधारित थे, इन नारों से दिल्ली की सड़के गूॅज उठी।

29–11–07 को डी.टी.सी.के दो ट्रर्मिनल उत्तम नगर व नेहरु प्लेस के हर बसों में जाकर महिलाओं को हेल्प लाईन बुकलेट व पुरूषों को पर्ची दी। इसके साथ–साथ पुरुष किस तरह से इस हिंसा को खत्म करने में सहायक हो सकते हैं, पर बात की।

4–12–07 *बवाना में 4 दिसंबर 2007 को रैली और डी ब्लॉक के पार्क (सुलभ शौचालय के पास वाले) में हिंसा दहन* के कार्यक्रम का आयोजन किया। कार्यक्रम का आरंभ दो बजे *रैली से हुआ।* इस दौरान ए बी सी डी ई और नए ब्लॉक से गुजरते हुए सबको सोलह दिवसीय हिंसा विरोधी अभियान के बारे में जानकारी देते हुए जा रहे थे। जिन जिन गलियों से हम गुजरते वहाँ से पुरूष अपनी भागीदारी यह कहते हुए निभा रहे थे कि हम तुम्हारे साथ हैं। महिलाएं व बच्चे अपनी–अपनी गलियों के आस पास जुड़ते और निकलते जा रहे थे। जागोरी टीम व निगरानी समिति और साथी सदस्यों ने अपनी आवाज़ में जोर और उत्साह के साथ गाना गाए और नारे लगाए। ***लोगों ने शपथ ली कि अपने इलाके में होने वाली हिंसा को खत्म करने के लिए हम सब एक होने के साथ साथ ना हिंसा करेंगे और ना ही हिंसा सहेंगे। निगरानी समिति और साथी समूह की एक एक सदस्य ने उन हिंसाओं का दहन किया जिन्हें हमने रैली मे प्लॉकार्ड पर लिख कर घुमाया था।***

5–12–07 को दिल्ली विश्वविद्यालय के **रामजस कॉलेज** में **जेंडर और स्पेस पर** एक परिचर्चा का आयोजन किया गया था जिसका संचालन जागोरी द्वारा किया गया था। इस कार्यक्रम के तहत

रामजस कॉलेज के छात्र एंव छात्राओं ने भाग लिया और वहाँ पर मौजूद श्री अनिल शुक्ला, किरण वालिया और श्री अन्शु प्रकाश सी एम डी, दिल्ली परीवहन निगम से आये सभी के साथ सवाल जवाब किए।

पुलिस विभाग कि तरफ से यह आया कि महिलाएं किस तरह से अपने को सुरक्षित बना सकती है व पुलिस भी मदद के लिए तैयार है। इसके साथ ही अन्शु प्रकाश जी ने भी कहा कि वह भी अपनी बसों में महिला सुरक्षा पर घ्यान दे रहे हैं। भागीदारों में छात्राओं के मुकाबले में छात्रों की भागीदारी ज्यादा रही । खास तौर से पुलिस प्रतिनिधि के वक्तव्य पर भागीदारों के सवाल व टिप्पणियाँ ज्यादा रही और डी टी सी के स्टाफ से व्यवहार पर प्रश्नचिन्ह ज्यादा सामने आए। किरण वालिया ने समाजिक नजरिये को रखा व कहा कि इस सोच को बदलने कि जरुरत है।

इस तरह का आयोजन छात्र वर्ग एवं प्रशासक को सोचने पर मजबूर कर देता है कि वाकई कितनी परेशानी और जददोजहद के बाद प्राप्त सुविधाएं हमें मिलती हैं और किन–किन कठिनाईयों के साथ हम उसे अपनी रोजमर्रा जिन्दगी में झेलते हैं।

7–12–07 खादर में ***7 दिसंबर 2007 को 2 बजे से*** *साईकिल रैली का आयोजन किया गया। यह रैली फेस 3 से होते हुए गडडा कालोनी व ए 2 ब्लॉक में गई। इस रैली में खादर की किशोरियों व महिलाओं ने बढ़ चढ़कर भागीदारी निभाई। यह किशोरियां व महिलाएं सब को पर्ची व 16 दिन के अभियान की जानकारी दे रही थी व सब को शामिल होने को कह रही थी।* ***हिंसा नही सम्मान चाहिए, जीने का अधिकार चाहिए*** *जैसे नारे खादर में व उसकी हवा में गूंज रहे थे।*

10–12–07 को जागोरी के ऑफिस में चार फिल्म दिखाई गई – Morality TV and the loving jihad ; A body that will speak ; Gender Unpack ; and *Tu Zinda Hai* . इस कार्यक्रम में 17 लोगों ने हिस्सेदारी ली। क्रॉस कल्चर सोसाइटी (सी.सी.एस) के चार साथियों ने भी भाग लिया। सब को फिल्म अच्छी लगी व सी.सी. एस के साथियों ने कहा कि इन फिल्मों से उन्हें गहराई से मालुम हुआ कि भारत में किस तरह से महिलाएं हिंसा का सामना करती हैं। सब ने कहा कि इन फिल्मों का चुनाव अच्छा था।

16 दिवसीय महिला हिंसा विरोधी अभियान नवम्बर 25 से 10 दिसम्बर 07 में हमने 7149 हेल्प लाईन बुक्लेट बाँटी और ये हेल्प लाईन बुक्लेट केवल महिलाओं तक पहुंची।